In this collection of folk stories from the Himalayas, retold and edited by renowned writers Kamla K. Kapur and Prawin Adhikari, the reader is taken on an enchanted journey through the shared sacred landscapes of India, Nepal, and Tibet/China. From magical flying horses and battles with mountain demons to the trials and tribulations of everyday people and pilgrims, the folk narratives offer a glimpse into the rich cultural tapestry of this unique landscape.

Recorded during a collaborative multidisciplinary study over a three-year period, these stories speak to timeless questions of love, sacrifice, heartbreak, redemption, and the search for meaning in life. The collection draws inspiration from the holiest mountains, called Kailas (and also known as Tise and Kang Rinpoche), and Lake Manasarovar, two important sacred sites located in Western Tibet. The stories speak to diverse and syncretic religious beliefs and everyday practices that can be found throughout the region and beyond.

ICIMOD

THE NEW SCHOOL
INDIA CHINA INSTITUTE

VAJRA BOOKS

www.vajrabooks.com.np
ISBN 978-9937-623-82-7
9 789937 623827

SHARED SACRED LANDSCAPES

Kamla K. Kapur
Prawin Adhikari

VAJRA

SHARED SACRED LANDSCAPES

STORIES FROM MOUNT KAILAS, TISE & KANG RINPOCHE

Edited & Retold by
Kamla K. Kapur
Prawin Adhikari

धर्मद्वार

कुदांग नाम के एक गाँव में मिश्रित रूप से बौद्ध, हिन्दू, जैन, बोनपो, कुछ मूर्ति की पूजा करने वाले लोग व कुछ आध्यात्मिक लोग रहते थे जिनमें से कुछ वहाँ के मूल निवासी थे व कुछ प्रवासी भारत, चीन, तिब्बत से आये हुए थे । वे लोग बहुत ही लंबे समय से भूखे,गरीब, बूढे, बीमार व शारीरिक रूप से विवश थे । कुदांग गाँव के पर्वतीय क्षेत्र में ज्यादा कुछ नहीं पनपता था अतः वहाँ खाद्य बहुत कम था । यहाँ तक की उनकी बकरियां व याक सभी बहुत कमजोर थे और दूध देने में अक्षम थे । इसके अलावा सर्दियों में वहाँ की झील का इलाका भी जम जाता था और अपने दुर्बल शरीर से उस बर्फ की खुदाई करना व गाँव में उपलब्ध अल्प ईन्धन से उसे गरम करना उन लोगों के लिए बहुत ही दुष्कर कार्य था ।

वे अपने आप को बहुत असहायी, दुखी व जीवन द्वारा त्यागा हुआ महसूस करते थे । वे हमेशा इस आशंका से भयभीत रहते थे कि उनके पिछले जन्म के पाप इस जन्म में भी उनके साथ ही हैं एवं वे एक के बाद एक अपने बुरे कर्मों के जमाव के अंतहीन चक्र में फंसे हुए हैं ।

उन लोगों के दुखी होने का प्रमुख कारण उनकी यह कुण्ठा थी कि वे लोग पवित्र कैलास पर्वत की लंबी व कठिन यात्रा एवं उसकी परिक्रमा करने का बीडा उठाने में असमर्थ थे । उनका विश्वास था कि उस पवित्र पर्वत की झलक मात्र से ही वे अपने सभी पापों से दोषमुक्त हो जायेंगे व हमेशा के लिए सुखी व समृद्ध हो जायेंगे । युगों युगों से दोहराई जाने वाली देवी देवताओं की कहानी के बारे में उन्हें मालूम था जिन्होंने अंतकाल तक उस पवित्र पर्वत के पास आनंद पूर्वक ध्यान किया, वही पवित्र पर्वत जो की ब्रह्माण्ड के केंन्द्र में

स्थित वह बिंदु है जिससे जीवन की उत्पत्ति हुई है व जिसमें जीवन विलीन हो जाता है ।

बादलों से घिरे हुए एक सर्द दिन में जब सभी गाँववाले बेहद उदास थे, एक दुबलापतला, अल्प रूप से अन्धा, मिश्र वंश परंपरा से बहिष्कृत एक अनाथ बालक जिसका नाम सागर था एवं जिसे गाँव के सभी लोग थोडा पागल समझते थे, अपने उदास कुत्ते व पतली बिल्ली को लेकर तेजी से लंगडाते हुए गाँव के मध्य में पहुंचा और वहाँ से उत्साहपूर्वक चिल्लाने लगाः

"वो आ रहा है ! वो आ रहा है ! हम लोगों को सुखी करने वो आ रहा है । मेरा ह्रदय उसे हर दिन पुकारता था । मैंने कल रात ही उसे सपने में देखा था । और देखो आज पद्मसम्भव अपने एक भक्त के साथ हमारे गाँव आ रहा है !"

गाँववालों ने उस लड़के को समझाया कि उनके गाँव में आजतक एक भी धर्मयात्री नहीं आया है जो कि कैलास पर्वत की यात्रा के मार्ग पर हो । वह खाली कोरी कल्पना की उड़ान भर रहा है ।

किसी ने प्रश्न किया, "कौन पद्मसम्भव? क्या उनकी सदियों पूर्व मृत्यु नहीं हो चुकी है?"

सागर ने कहा, "हाँ । परंतु अदृश्य होते हुए भी वो हमारे साथ है । उनका शरीर इन्द्रधनुष का बना हुआ है व उनकी आँखे अदृश्य चीजों को भी देख सकती हैं ।"

"हाँ, जैसे तुम्हारी !" किसी ने मजाक उड़ाते हुए कहा ।

"यह सत्य है । मेरे पिता ने मुझे बताया है, पद्मसम्भव खिलते हुए कमल में आठ वर्षीय बालक के रूप में पैदा हुए थे ।"

सागर के पिता की मृत्यु को चार वर्ष बीत चुके है, यह सोचते हुए सभी गाँव वालों ने अपनी आँखें घुमाईं ।

सागर ने उन लोगो की तरफ देखा और भोलेपन के साथ बोला, "परंतु कल वह मेरे सपनों में आये थे और उन्होंने मुझे कहानी भी सुनायी । उन्होंने ही मुझे बताया की पद्मसम्भव का मतलब है 'कमल से उत्पन्न' । यद्यपि उनका दाह किया गया था फिर भी वे उड़ सकते हैं । वे जरूरतमंदों की मदद करने के लिए हमेशा यहाँ रहते हैं । वे महान रक्षक हैं जो मानवता को दुष्ट आत्माओं के द्वारा नष्ट होने से बचाने के लिए चमत्कार करते हैं ।"

"चमत्कार !" किसी ने उपहास करते हुए कहा ।

"माँ हमेशा कहती है कि कपड़ों में छेद चमत्कार के कारण ही होते हैं, मैं नहीं जनता इसका क्या अर्थ है परंतु वो अक्सर यह कहती है ताकि मुझे यह बात याद रहे । क्या किसी को इसका अर्थ मालूम है?"

"इसका कुछ अर्थ नहीं है," किसी ने बनावटी ढंग से मुस्कुराते हुए कहा ।

"यदि हम ध्यान पूर्वक सुनने का प्रयास करेंगे और पद्मसम्भव के बताये हुए मार्ग पर चलेंगे तो अमृत सुधा का पान करने का परम सुख मिलेगा," सागर ने चिल्लाते हुए कहा । उसकी आँखें चमक रही थीं ।

अमृत !

"परंतु जल्दी करो । हमें यह सुअवसर खोना नहीं चाहिए ।"

गाँव के ज्यादातर लोग अपने घरों को वापस जाने लगे लेकिन कुछ जवान, बच्चे व कुछ बुजुर्ग सागर के साथ चल पड़े । उसका कुत्ता और बिल्ली भी उसके साथ थी । सागर उन लोगों को झील की तरफ ले गया जहाँ सर्दी में झील ठोस रूप से जमी हुई थी । पिछले कुछ समय से जिन शुष्क सीढ़ीदार खेतों में वर्षा की कमी के कारण कुछ नहीं उगा था वहाँ से गाँव के दूसरे किनारे तक ऊपर की ओर सीधी ढाल वाले रास्ते की ओर सागर ने इशारा किया ।

"देखो ! उस चट्टान की तरफ जो किसी पक्षी की तरह प्रतीत होती है, वहाँ एक लंबी दाढ़ी वाला, लाठी के सहारे चलता हुआ, कंधे पर झोला लटकाये हुए, सर पर पगड़ी पहने हुए एक व्यक्ति मुझे साफसाफ दिखाई दे रहा है । उसका कद बहुत छोटा है और उसके साथ एक लंबा व्यक्ति अपने कंधे पर कुछ सामान लिए उसके साथ है । ये छोटे कद व लंबी दाढ़ी वाला साधू वही व्यक्ति है जो कल रात मेरे सपने में आया था । मुझे देखकर वह हंसा व उसने मुझे उठाकर सीने से लगाया । मैं जब सुबह जागा तो अत्यंत प्रसन्न था । अब वह हमारे बहुत करीब है, वहाँ गोल पत्थर के पास वह किसी पंखों वाले देवता की तरह प्रतीत होता है । हमारे दुख व सारी परेशानियों को दूर करने के लिए देखो वो आ गया है ।"

गाँव वालों को लगा की उस लड़के की बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है, क्योंकि उन्हें कोई भी कहीं भी दिखाई नहीं दे रहा था । अतः कई लोग वापस अपने घरों की ओर जाने लगे थे । कुछ लोग सागर के साथ रूके रहे । जिनमें अधिकतर बच्चे थे । वे बच्चे सागर को अक्सर त्रस्त करते थे व उसका मजाक उड़ाते रहते थे । वे जानते थे कि वहाँ कोई भी उन्हें सागर के साथ मारपीट करते हुए नहीं देख पाएगा । वे बच्चे उसके साथ कभी नहीं खेलते थे । यहाँ तक कि कुछ अछूत बच्चे उसे अपनी तुलना में ज्यादा अछूत मानते थे ।

"क्या तुम्हे कुछ सुनाई दे रहा है?" सागर ने अपने कानों को हल्का दबाते हुए कहा । "वे लोग एक गोल पत्थर की छाया में बैठे हुए हैं व उस लंबे आदमी ने कुछ सामान को बाहर निकाला हुआ है और वे उन्हें बजाते हुए गीत गा रहे हैं ।"

गाँव वालों ने उत्तर दिया, "नहीं । हमें कुछ सुनाई नहीं दे रहा है ।"

"सुनो ! सुनो ! सुनो ! तुम सुन सकते हो !" सागर ने उत्सुकता से कहा ।

तत्पश्चात सभी गाँव वालों ने अपने अपने घरों की तरफ चलना आरम्भ कर दिया ।

सागर ने चिल्लाकर कहा "तुम लोग इतनी दूर तक आ ही गए हो, थोड़ा और आगे आओ ! अपनी आत्मा के कानों द्वारा सुनने का प्रयास करो ! इस गीत के शब्द सुनने का प्रयास करो । उन लोगों की तरह मत बनो जो लोग भक्ति का संगीत सुने बिना ही मरने के लिए पैदा होते हैं ।"

सागर के ये वाक्य सुनते के साथ ही एक अद्भुत बात हुई । अनायास ही धारा की तरह बहते हुए नीले रेशे, पारदर्शी धुंध व प्रकाश के साथ उन लोगों के चारों तरफ झिलमिलाने लगे व उनके हाथ के चारों तरफ लिपट गये और उनके नाक व मुँह में प्रवेश करते हुए उन्हें इतना हल्का कर दिया जैसे कि वे हवा से ही बने हों और प्रकाश की गति से उन के मस्तिष्क तक जाके सागर के बृहत्, भोले, विशाल व खुले दिल तक पहुँचे । वो सागर का ही मन था या नहीं इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता क्यूँकि सागर का मन व मस्तिष्क दोनों एक दूसरे को अपने लक्ष्य की ओर पूछताछ करते हुए, प्रेरित होते हुए उसका मार्गदर्शन करते थे । यद्यपि सागर जिस लक्ष्य की तरफ अपने जन्म के क्षण से ही और शायद जन्म की परिकल्पना से पहले ही किसी अटल तीर की तरह बढ रहा था, उस लक्ष्य का वह नाम भी नहीं जनता था । वैसे भी हमारे पूर्वजों ने हमें बताया है की हमारी आत्माओं की जड़ें बहुत गहरी हैं जो काल के अस्तित्व के प्रारम्भ तक फैली हुई हैं ।

कुछ समय के लिए गाँववाले हक्केबक्के व किंकर्तव्यविमूढ ही रह गए कि आखिर वे कहाँ हैं । इससे पहले उन्होंने इस प्रकार अपना जीवन कभी नही देखा था । इस भोले बच्चे की आँखों के माध्यम से उनका पूरा दृश्य ही बदल गया था । उन्होंने उसे सुंदरता से परिपूर्ण देखा । नग्न पर्वतों की सीमाएँ व ढलावदार घाटी चमक उठी ओर ढलती हुई साँझ की शुभ्रता में सूर्य भूरे, नीले ओर बैंगनी रंगों से स्पंदित हो उठा । कुछ दूरी तक देखने पर पर्वतों पर बर्फ की चादर से ढकी हुई व सीधी खड़ी चोटियाँ इस प्रकार प्रतीत होती थी जैसे कि तेजस्वी संरक्षक का कर्तव्य निर्वाह कर रही हो ।

अब तक अपनी दैनिक व्यवहारिक सम्वेदनशीलता के कारण जो सुंदरता वो देख नहीं पा रहे थे वो अनायास ही अद्‌भुत तरह से चमक उठी एवं उन्हें अदृश्य व अनसुनी आवाजें भी सुनाई देने लगीं ।

उन्हें एक शिलाखंड के किनारे बैठे हुए दो आदमी दिखायी दिए जिन्हें गाँववालों ने अनेक बार बिना ध्यान दिए देखा होगा लेकिन आज वे अपने पंखों को फैलाए जमीन पर मँडराते हुए एक रक्षक के रूप में बिल्कुल किसी देवता की तरह दिखायी दे रहे थे । उन्हें हवा में गूँजती हुई बाँसुरी की बार बार आने वाली धुन व तारों की संगत में सांगीतिक गीत की लय सुनाई दी । हालाँकि शब्दों और संगीत की भाषा को ना समझते हुए भी अर्थ से परे का भाव उनकी सुप्त, निष्क्रिय व हतोत्साहित आत्मा को भेदता चला गया । पर्वतों से टकराती हुई व घाटी से गूँजती हुई धुन उनके कानों के परदों तक पहुँची व उनके हृदय के खाली कोनों में प्रतिध्वनित होने लगी । इस ध्वनि ने उन्हें उनके जीवन से,परमात्मा से व उन्हें अपने आप से जोड़ दिया था । उन्होंने उस तृष्णा का स्वाद चख लिया था जिसके बिना अनेक सुख सुविधा व भोग विलास के बाद भी व्यक्ति का जीवन व्यर्थ ही रह जाता है ।

वह आवाज उनके कानो में अमृत की तरह घुलने लगी व उस ध्वनि ने उनकी सभी की चिंताओं, दुविधाओं और संदेहों को उनके मस्तिष्क में सुन्न करके शांति का मार्ग खोला जिसका उन्होंने कभी अनुभव नहीं किया था । वे कमल की खिलती हुई पंखुड़ी की तरह एक शून्यता की अवस्था में पहुँच गए जो उन्हें उस असीम विस्तार तक ले गयी जहाँ ना कोई तारे थे ओर ना ही कोई बादल । जिस प्रकार एक सुप्त बीज मिट्टी व पानी में द्रवित होता है उसी प्रकार वे भी उस शांति में द्रवित हो गए । जिस स्वप्न को वो लम्बे समय से भूल चुके थे उसी स्वप्न की मधुरता ने उन्हें प्रबुद्ध कर दिया था । वह प्रत्यक्ष रास्ता जो अंधेरे से घिरा हुआ था, वह भावपूर्ण ढंग से घूमते हुए चमत्कारिक ठिकाने तक पहुँच गया था और उनके दुःख, हानि की सारी अवधारणा को एक मैले कीचड़ में बदल दिया था जिसमें से नीले कमलों की उत्पत्ति होती है ।

सागर, जिसे उन लोगों के हृदय की भाषा समझ आ रही थी, उसने गाँववालों को अनुवाद करके बताया "देखो वो गा रहे हैंः जाग्रत रहो, सचेत रहो, सो मत जाना !"

किसी नीली बिजली के वज्रपात की भाँति ये शब्द उनके दिमाग के सारे परदों को भेद गए व उनके हृदय में उत्साह जगा गए । एक छोटी बच्ची को स्मरण हुआ कि कैसे वो अपने बचपन में गीत गाया करती थी । एक अन्य लड़की को याद आया कि किस आनंद से वह बुनाई का काम करती थी व

घूमती रहती थी । एक नवयुवक को अपनी पुरानी यादें ताजा हुईं कि किस प्रकार वह पर्वतों से रंग इकट्ठा करके लाता था और पत्थरों पर मण्डल व देवताओं के चित्र बनाता था । एक अन्य व्यक्ति को औषधि द्वारा लोगों का उपचार करने की इच्छा का स्मरण हुआ । उसी क्षण उन लोगों ने अपने भूले हुए सपने को साकार करने का संकल्प लिया ।

गाना सम्पन्न करने के पश्चात उन अनजान लोगों ने अपने सांगीतिक उपकरण व झोले उठाए और पहाड़ी पर चढ़ाई करने लगे । एकदम सीधी चढाई होने के कारण वे लोग बहुत ही लोचदार ढंग से उसी प्रकार चढ़ाई कर रहे थे जिस प्रकार पक्षी बहती हवा में विहार करते हैं । वे अपरिचित व्यक्ति उन गाँव वालों के निकट आने लगे । यद्यपि वे एक लम्बी यात्रा करके आ रहे थे फिर भी वे स्वच्छ, फुर्तीले, सेहतमंद व स्वस्थ लग रहे थे ।

उनके पहनावे से ऐसा बिल्कुल भी प्रतीत नहीं होता था कि वो किसी प्रमुख धर्म से सम्बन्ध रखते होंगें । हालाँकि लम्बे व्यक्ति की दाढ़ी से फिर भी लग रहा था वह मुसलमान हो सकता है । उन लोगों ने ना ही केसरिया रंग के कपड़े पहने हुए थे और ना ही रूद्राक्ष के दानों से बनी माला पहनी हुई थी और उनकी उलझी हुई जटाएँ भी नहीं थी जो उनके हिंदू होने का संकेत करती । ना ही उन्होंने गहरे भूरे रंग के चोगे पहने हुए थे, ना ही वे गंजे थे और ना ही लामाओं की तरह उनके हाथों में भिक्षा पात्र था । यद्यपि उनकी मुखाकृति कांतिमान थी जैसी देवताओं की मुखाकृति होती है । फिर भी वे साधारण सी भारतीय पोशाकों में साधारण से मनुष्य दिखायी दे रहे थे ।

सागर दौड़ के उन दोनो के नजदीक गया व दोनों में से छोटे कद के व्यक्ति के चरणों में गिर पड़ा । वह छोटे कद का व्यक्ति वही था जिसे सागर ने अपने स्वप्न में देखा था । उस व्यक्ति ने सागर को उठाया और सागर अपनी सहज बुद्धि से उस व्यक्ति के गले लग गया और अपनी बाहों को उसके गले में डाल कर उससे चिपक कर खुशी से सुबकने लगा । वैसे तो गाँववालों ने ही सागर का भरण पोषण किया था परंतु उसके माता पिता को छोड़कर किसी ने भी उसे इस प्रकार से आलिंगन नहीं किया जिस प्रकार आज उसे प्राप्त हुआ था । किसी दिन वो एक घर के लोगों का झूठन खाता था तो किसी दिन दूसरे घर के लोगों का छोड़ा हुआ भोजन उसे प्राप्त होता था । वह बेचारा जमीन पर याक के साथ भूसे में ही सोता था ।

सागर का कुत्ता उन अजनबी आगंतुकों के ऊपर उछलने कूदने लगा और उसकी बिल्ली उनके पैरों के इर्द गिर्द मँडराने लगी ।

उस पवित्र व्यक्ति द्वारा उस अनाथ को आलिंगन करते देख गाँव वाले एकदम भावुक हो गए और उसके चरणों में झुक गए । जिस तरह का व्यवहार वो उस अनाथ बच्चे के साथ किया करते थे वो याद करके उन्हें पश्चाताप होने लगा । उन लोगों ने उस दूसरे व्यक्ति के भी पैर छुए जो दूर से ही उस प्रबुद्ध व्यक्ति के साथ उल्लसित दिखायी दे रहा था ।

सागर उन आगंतुकों को गाँव की तरफ ले जाने लगा । बिना एक शब्द बोले गाँव वाले भी सागर के पीछे पीछे चल पड़े । सागर का कुत्ता व उसकी बिल्ली उन लोगों के आगे तेजी से दौड़ने लगी । सीढ़ीदार खेतों से होते हुए जब वे गुजरने लगे तो दाढ़ी वाले व्यक्ति ने अपने झोले में से कुछ अनाज के दाने निकाले और उन्हें चारों तरफ बिखरा दिया । दूसरे खेत की ओर जाते हुए उसने अपने झोले में से एक गेंद निकाली और सागर की तरफ फेंकी, जिसे सागर ने उछल कर पकड़ लिया । सागर को इतने उत्साह पूर्वक खेलते देख गाँव के वे बच्चे जो अपने माता पिता के साथ गाँव के दूसरे छोर तक चले गए थे, जो सागर के साथ कभी नहीं खेलते थे, उसके साथ आकर खेलने लगे व एक दूसरे को धकेल धकेल कर चिल्लाने लगे और दौड़ भाग करने लगे ।

बाद में गाँव के रास्ते में ही वह आगंतुक झील के किनारे खड़ा हो गया और अपने डंडे को पानी में सात बार डुबाया व उसे इस प्रकार हिलाया जैसे की मंथन कर रहा हो । अपने इस कृत्य में वह खूब खिलखिलाकर हंस रहा था ।

जैसे ही वे लोग गाँव पहुँचे वहाँ वर्षा होने लगी । हर कोई प्रफुल्लित हो उठा क्यूँकि उस साल वहाँ बारिश नहीं हुई थी और कूटू और जौ की फसलें सूखने लगी थीं । सागर उछलते कूदते हुए उन आगंतुकों को अनाज घर की ओर ले जाने लगा जिसे वह अपना घर कहता था । वहाँ पर कुछ मुर्गियाँ जमा हो गयीं जिनमें से कुछ बहुत ही दुर्बल थीं । सागर के कुत्ता व बिल्ली जो सागर के पीछे पीछे आ रहे थे, वे अनाज घर में घुसते ही भूसे पर लोटपोट करने लगे जिस भूसे को सागर अपना बिस्तर व कंबल समझ कर उस पर सोता था । अत्यधिक ठंड होने पर वह गरमाहट लेने के लिए उसके अंदर दुबक कर सो जाया करता था ।

गाँव के सभी लोग उन आगंतुकों के लिए उत्कृष्ट भोजन लाने के लिए अपने अपने घरों की ओर तेजी से दौड़ पड़े । उन्होने अपने स्वयं में यह बदलाव पाया कि जितनी अभाव केंद्रित सोच व सम्वेदनशीलता में वो जी रहे थे उससे ज्यादा आनंद उन्हें भोजन लाने के लिए मिल रहा है । वे आगंतुकों, सागर व अन्य कुछ लोगों के लिए चाय की पत्तियाँ व याक का मक्खन, कूटू व जौ की बनी मीठी रोटी, सुखाया हुआ याक का गोश्त लेकर आए और इतना ही नहीं वे

सागर के कुत्ते, बिल्ली व पक्षियों के लिए भी खाद्य सामग्री लेकर आए । बहुत सारे लोग गद्दे, रजाइयाँ व हाथ से बने कम्बल भी लेकर आए ।

उस साधु व्यक्ति के साथ साथ लम्बी दाढ़ी वाले व्यक्ति ने दिल खोलकर पूर्ण उत्साह से भोजन ग्रहण किया एवं हर कोई उस भोज में सम्मिलित हुआ । उसके पश्चात वे आगंतुक वहीं गद्दों पर लेट गये और जल्दी ही सो गए ।

गाँववालों ने लम्बे कद के व्यक्ति से उसका नाम पूछा । उसने बताया कि उसका नाम मर्दाना है जो पंजाब से है और लोग उसे प्यार से भाई मर्दाना कहकर पुकारते हैं ।

"भाई मर्दाना लामा," ये कहकर सागर ने उसे प्रणाम किया ।

"और ये गुरू नानक हैं," मर्दाना ने उत्तर दिया ।

"पद्मसंभव रिन्पोचे नानक गुरू," सागर ने उत्सुकता भरे स्वर में कहा ।

चूँकि बाबा नानक सो चुके थे अतः सागर ने उन्हें साष्टांग प्रणाम किया और बोला, "क्या ये दुष्ट आत्माओं का विनाश करते हैं?"

"हाँ, हमेशा ही," ये कहकर मरदाना मुस्कुराने लगा । "परंतु वे हमें दुष्ट आत्माओं को वश में करना सिखाते हैं, मारना नहीं । क्यूँकि जो दुष्ट आत्माएँ हमारे दिमाग में हैं उन्हें मारा नहीं जा सकता ।"

"आपका गुरू नानक रिन्पोचे से क्या सम्बन्ध है?" सागर ने पूछा ।

"मैं एक लोक गायक के अलावा कुछ भी नहीं हूँ । मैं बस अपने गुरू का साथी, सेवक और भक्त हूँ । बाबा नानक अपने आप को अपने प्रिय के गीत गाने वाला एक गवैया और सिर्फ एक नौकर ही मानते हैं । उसी प्रिय परमात्मा ने उन्हें बनाया है, उनके वाद्यों को बनाया है और उनके माध्यम से ही वो गाते हैं । बाबा नानक बिना किसी आवश्यकता के आजकल ज्यादा बात नहीं करते हैं ।"

"वह प्रियतम कौन है?"

"प्रियतम वह है जो जाति, रंग, वंश, वर्ग और राष्ट्रीयता से परे होकर हम सभी के दिलों में वास करता है ।"

"लेकिन उस का नाम क्या है?" किसी ने पूछा ।

"उसका कोई नाम नहीं है, वह अनाम है लेकिन हाँ लोग उसे अलग अलग नामों से पुकारते हैं । जैसे कुछ लोग उसे ऊर्जा कहते हैं, कुछ उसे रहस्य समझते हैं तो कुछ उसे ब्रह्माण्ड कहकर पुकारते हैं । उस एक के अनेक नाम हैं क्यूँकि बहुत सारे लोग उनकी आराधना करते हैं और उन्हें शिव, ब्रह्मा, दुर्गा, देव, तारा, शक्ति, भगवान, अल्लाह, रब, वाहेगुरू और अन्य कई हजारों नामों से पुकारते हैं ।"

"वह आदमी है या औरत?" एक महिला ने पूछा ।

भाई मरदाना ने उत्तर में कहा, "या तो दोनों या फिर दोनो में से कोई नहीं ।"

"हाँ, मेरी माँ भी यही कहती थी, उन्होंने एक चित्र भी बनाया था जिसमें शिव और पार्वती दोनों हैं जिनका मस्तिष्क, शरीर व आत्मा एक ही है । वो उस चित्र को अर्धनरनारी कहती थी," सागर ने उत्तेजित होते हुए कहा ।

सागर अनाज घर में लकड़ी की दीवार के पास गया जहाँ उसने अपनी माँ के द्वारा बनाए हुए चित्र की ओर इशारा किया । दीये की रौशनी में सभी गाँववालों ने उस तस्वीर की ओर देखा जिसमें एक ही शरीर था, आधा नर का और आधा नारी का व शरीर रचना ही उनके कपड़े थे । वह चित्र आगे की तरफ का नीला व पीछे की तरफ हरे रंग का था । कहीं कहीं निर्वस्त्र और कहीं कहीं आभूषणों से सुशोभित था ।

उनकी सीमाएँ एक दूसरे में प्रवाहित होती हुई, नृत्य करती हुई, परिवर्तित होती हुई व अत्यंत काल्पनिक थीं । चित्र के ऊपरी हिस्से में जहाँ लहराते हुए बादल फैले हुए थे वहाँ एक से नीले रंग में विलीन होती प्रतीत होती थी ।

"हे माता पिता परमात्मा !" सागर ने प्रफुल्लित होकर कहा ।

"बिल्कुल !" भाई मर्दाना ने समर्थन में कहा ।

"तुम्हारा धर्म क्या है?" उन्होंने पूछा ।

"धर्म है ये प्रकृति और उसका निर्माता । धर्म है ये नदी, हवा, आग, पहाड़, झील एवं हमारी आंतरिक व बाहरी प्रवृत्ति । जो इस ब्रह्मांड का रचयिता है एवं जिसके लिए यह सजीव व निर्जीव प्रकृति एक दुल्हन के रूप में अपनी सुहाग रात के लिए सजी हुई व सुशोभित है, उस स्वामी का नाम बनवारी है जिसके हम सब सेवक हैं । इस संसार के सौंदर्य की उपासना करने के लिए एवं विभिन्न देशों के लोगों से मिलने के लिए हम पूरी दुनिया में भ्रमण करते रहते हैं । जब कभी भी बाबा नानक किसी प्रेरणाप्रद स्थल को देखते हैं तो वे इस पृथ्वी की भव्यता को देखकर अचम्भित हो जाते हैं एवं उसी प्रबलता से उसके प्रेम में पड़ जाते हैं जैसे किसी प्रियतम के साथ पहली बार प्रेम होता है और वे बिल्कुल गहरी समाधि में लीन हो जाते हैं । हमने पूरी दुनिया का भ्रमण किया, नए नए लोगों से मिले,उनके रीति रिवाजों को देखा समझा । यद्यपि वे लोग अलग अलग जगह के थे व उनका जीवन जीने का ढंग व भक्ति का तरीका भी भिन्न था । बाबा जानते हैं कि इस धरा पर हर देश कई छोटे छोटे देशों में विभाजित है और वहाँ के रहने वाले लोग पद प्रतिष्ठा, विश्वास एवं रंग बिरंगी विभिन्नता होने के बावजूद भी सभी एक हैं और ये धरती हम सबकी माँ है ।"

सागर ने पूछा, "आप अपने आप को क्या कहकर पुकारते हैं?"

"सिख ।"

"इसका क्या मतलब होता है?" गाँववालों ने प्रश्न किया ।

"'सिख' संस्कृत के शब्द 'शिष्य' से आया हुआ है जिसका अर्थ है एक विद्यार्थी जो सभी विधाओं को सीखने के लिए निष्ठावान है । इन सबसे भी ज्यादा एक सिख वह है जो अपने भीतर के परम ज्ञान की खोज के लिए, उसे समझने, परखने व उसे ढूँढने के लिए लालायित है ।"

फिर किसी ने पूछा, "इसके अलावा आप और किस चीज में विश्वास रखते हैं?"

"बाबा का कहना है कि उनके अनुयायियों को अपना जीवन पूर्ण रूप से जीना चाहिए । वे स्वयं एक किसान हैं, एक पति हैं, पिता हैं एवं गुरू हैं जो अपने सभी कर्तव्य पूर्ण रूप से निभाते है एवं जीवन में आने वाली प्रत्येक स्थिति में निष्पक्ष रूप से असंग्लन रहते हुए भी उसके सहभागी बनते हैं । वे इस सांसारिक दुनिया में रहते हुए भी एक योगी की तरह अपना जीवन जीते हैं जिस प्रकार कमल का फूल कीचड़ से लथपथ होते हुए भी एकदम स्वच्छ रूप से बाहर प्रकट होता है ।

"वे अपने भक्तों से कहते हैं कि सबको अपनी जीविका ईमानदारी से अर्जित करनी चाहिए एवं सबके साथ उसे बाँटना चाहिए और सभी के साथ समान रूप से व्यवहार करना चाहिए । बाबा यह भी कहते हैं की हमें अंधविश्वास नहीं करना चाहिए और बहादुरी से एवं भयरहित जीवन जीना चाहिए । अपने दिमाग व विवेक का इस्तेमाल अपनी सीमाओं में रहकर करना चाहिए । और सबसे महत्वपूर्ण बात यह याद रखो कि उस परम परमात्मा का नाम लेना मत भूलो । खासतौर पर जब तुम किसी पीड़ा में हो ।"

"आखिर क्यूँ?" एक बच्चे ने सवाल किया ।

"क्यूँकि जब हम किसी को याद करते हैं तो वह व्यक्ति हमारे दिमाग एवं यादों में जीवित हो उठता है । अतः वह हमारा वर्तमान बन जाता है । जिस प्रकार अगर तुम अपने प्रिय का नाम स्मरण करो तो तुम पाओगे कि वह तुम्हारे पास ही है ! जब भी हो सके, जितना भी हो सके उस परमपिता परमात्मा का नाम दोहराओ, उसे अपना दोस्त बनाओ ताकि जब कभी तुम उसका नाम स्मरण करना याद ना भी रख पाओ तब भी तुम्हें वह याद रहे और जब भी तुम किसी गहरी विपत्ति में हो तो यह अभ्यास तुम्हें उसका स्मरण कराता रहे ।

"आह, हमारा प्रियतम हमारा सबसे करीबी मित्र है । जब भी तुम किसी दुःख रूपी हिमस्खलन के नीचे दबे होगे तब यही मित्र तुम्हें अपने लम्बे व मजबूत हाथों से बर्फ की मोटी परतों के नीचे से सुरक्षित खींच लाएगा । और बर्फीले

तूफान में भी सुख रूपी अग्नि प्रज्ज्वलित करेगा ताकि तुम्हारी हड्डियों को गरमाहट मिल सके! कैलास पर्वत की यात्रा के दौरान हमने एक बर्फीले तूफान का सामना किया ।"

"आपने कैलास पर्वत की यात्रा की है?" सभी गाँववाले एक साथ बोल पड़े ।

"हाँ, हम लोग कैलास पर्वत की यात्रा से ही लौट रहे हैं । वहाँ मानसरोवर में मैंने और बाबा ने मछलियों के साथ खूब तैराकी की," भाई मर्दाना ने कहा ।

अचानक ही गाँववालों को अपनी अप्राप्य इच्छा का स्मरण हो उठा जो उनके दुर्भाग्य की मूल वजह थी । और उस स्मरण ने उन्हें एक चक्रधार बर्फीले तूफान और प्रचण्ड हवा के वेग की भाँति सागर की उन्मुक्त आत्मा के आरामदायक कोनो से निकाल कर उन्हें उनके दुखी व दयनीय दिमाग की ओर ला पटका । उस तूफान ने उन्हें उड़ा दिया था । वह उनके दिमाग में आँधी की तरह घुसा और एक भयावह कोलाहल व दुखी आवाजों ने उनके उत्साह को चीर चीर कर दिया था । चूँकि वे लोग अनाज घर में बैठे हुए थे, अचानक ही उनके शरीर में कुछ बदलाव होने लगा, उनके कंधे झुकने लगे व शरीर के अंग एकाएक जवाब देने लगे थे, उनके चेहरे भारी होने लगे व उनकी आँखे शोक में डूबने लगी । वे भाई मर्दाना से अपनी दयनीय स्थिति व दुखी जीवन, गरीबी, कमजोर व बीमार शरीर के बारे में कराहते हुए व विलाप करते हुए शिकायत करने लगे । उन्होंने अपनी धर्मयात्रा का संकल्प ना ले पाने की असमर्थता का भी उल्लेख किया जिसके पश्चात वे अपनी सभी प्रकार की बीमारियों से स्वस्थ हो जाते एवं जो उन्हें उनके जन्मों जन्मों से जमा पापों से मुक्त कर देता ।

तभी किसी ने थोड़े कड़े स्वर में कहा, "अच्छा तभी तो आप दोनों इतने पवित्र व प्रफुल्लित दिखायी पडते हैं ! आप के सभी पाप व श्राप मानसरोवर के पवित्र पानी में धुल गए हैं और कैलास पर्वत की यात्रा ने दोनों को पवित्र कर दिया है ! चलिए, आप लोगों का इस अपवित्र गाँव में स्वागत है ।"

"कैलास व मानसरोवर दोनो ही अत्यंत विशाल व अवर्णनीय हैं । लेकिन वे प्रकृति के किसी भी लाजवाब प्रेरक स्थान से ज्यादा पवित्र नही हैं । यहाँ तक कि तुम्हारे अपने गाँव, घर, शरीर से ज्याद पवित्र भी नहीं हैं," भाई मर्दाना ने कहा ।

"यह तो ईश्वर निंदा है ! कैलास पर्वत तो इस पूरे संसार में सबसे विशिष्ट जगह है । यह तो ब्रह्माण्ड के केन्द्र में स्थित है ।"

भाई मर्दाना ने उत्तर में कहा, "पूरे संसार में बहुत सारे केन्द्र हैं क्यूँकि यहाँ मनुष्य व जीव रहते हैं । अतित और वर्तमान में भी वास्तविकता से पहले कैलास पर्वत एक पौराणिक उपमा के रूप में प्रसिद्ध है ।"

"उपमा से आपका क्या मतलब है?"

"उपमा एक भौतिक विषय है जैसे की कैलास पर्वत सच्चाई के लिए जाना जाता है और अन्य किसी भी रूप में वर्णित नहीं किया जा सकता । हिंदुओं, बौद्धों व जैनीयों के लिए कैलास पर्वत मेरू या सुमेरू पर्वत के रूप में प्रसिद्ध है जिसके लिए कहा जाता है कि सभी ग्रह, सूर्य व सितारे इसकी परिक्रमा करते हैं । कुछ लोग तो यह भी कहते हैं की मेरू पर्वत धरती के बीचोंबीच स्थित है । कुछ लोगों का कहना है की यह समुद्र के मध्य में स्थित है । कुछ इसे कश्मीर के उत्तरपश्चिम में स्थित 'पामिर' मानते हैं तो कुछ इसे कैलास पर्वत कहते हैं । लेकिन ज्यादातर लोगों का यही मानना है कि यही वह स्थान है जहाँ सभी देवों का निवास है एवं जिस ऊँची पहाड़ी पर चढ़ कर मनुष्य स्वर्ग की ओर जा सकता है," भाई मर्दाना ने समझाया ।

सभी गाँव वाले रोते हुए एक साथ बोले, "हाँ, हम भी यही मानते हैं ! परंतु हम यह सुख कभी प्राप्त नहीं कर पाएँगे ! हम सभी लोग अभिशापित हैं !"

"परंतु हमें इस अन्योक्ति को ही मुख्य विषय नहीं बनाना चाहिए । यदि तुम पत्थर की बनी मूर्ति, किसी पर्वत की पूजा करते हुए यह भूल गए हो की यह सिर्फ एक प्रतिरूप व स्मरण किए जाने योग्य रचना मात्र है, तब तुम अपने आप को उस चित्र रहित, आकार रहित व असीम व अपार भाव से दूर कर लेते हो जिसका वर्णन किसी एक उपमा के द्वारा नहीं किया जा सकता एवं जो किसी स्थान विशेष के लिए निर्धारित नहीं है । यदि हमें हमारी आस्थाएँ किसी सीमा में बाँधती है तो हमें अपनी आस्था की जाँच करनी चाहिए ।

"कैलास पर्वत से लौटते समय मैं सोच रहा था की 'मेरू' शब्द का क्या अर्थ है? मैंने बहुत से पुजारिओं व साधुओं से पूछा पर किसी को भी इसका उत्तर पता नहीं था । तत्पश्चात एक दिन मुझे समझ आया की यह 'मेरा' शब्द का ही स्नेहमयी परिवर्तित रूप हो सकता है । चूँकि 'मेरा' शब्द में अत्यंत अहंकार भरा हुआ है परंतु 'मेरू' शब्द पूर्णतया प्रेम से भरा शब्द है । और इस तरह से सभी कुछ मेरा है । 'मेरू' के अर्थ में यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मेरा है । अपने अहंकार का विस्तार करने पर यह सम्बन्ध बनता है परंतु यह विस्तार किसी फूले हुए गुब्बारे की तरह है । यदि उसे ज्यादा विस्तारित किया जाएगा तो वह फट जाएगा । जब हमारे अंदर अहंकार फैलता है तब वो अपने साथ प्रत्येक चीज को फैलाता है और कुछ भी शेष नहीं रह जाता । वास्तविकता में हम प्राणी यही

हैं, अत्यंत छोटे भी, और पर्याप्त रूप से बृहत् भी कि इस संपूर्ण ब्रह्माण्ड को अपना घर बना सकें ।

"यद्यपि कई लोगों को लगता है कि मेरू पर्वत, जिसे तुम कैलास कहते हो, अलग अलग जगहों पर विद्यमान है । योगियों का कहना है की यह हमारे भीतर विद्यमान है । हर एक काल के जितने भी प्रबुद्ध व्यक्ति हैं उन सभी का कहना है कि हमारी रीढ़, जिसे उन लोगों ने मेरूदंड कहा है, वही मेरू का आधार है, वही संसार की अक्ष रेखा है और वही संसार का केन्द्र है । हमें अपने स्वभाव की प्रकृति के तले से लेकर ऊपर की ओर चढ़ना सीखना है । जिस प्रकार हमारी रीढ़ के तल पर जहाँ 'मेरा' और उससे सम्बंधित दैत्य का वास होता, वहाँ से ऊपर की ओर हमारी पणग्रंथि व रीढ़ की चक्रधार गाँठों से होते हुए हजार पंखुड़ी वाले कमल की तरह हमारा मस्तक स्थित होता है । वास्तविक रूप से यही असल धर्म यात्रा है जिसे बाबा ***स्वयं की ओर की यात्रा*** कहते हैं । यही यात्रा हमें हमारे द्वारा किए गए पापों से अवगत कराती है एवं परमप्रिय के स्मरण की सहायता से हमें शुद्ध बनाती है ।"

ये सुनके एक व्यक्ति क्रोध में बोला, "आपके लिए यह सब कहना बड़ा आसान है क्यूँकि आप वहाँ जा के आ चुके हैं । परंतु हम शारीरिक रूप से रूग्ण हैं, गरीब हैं, भूखे व बेहद दुखी हैं । कड़ाके की सर्दी की वजह से हमारी बिरादरी के कई लोग अपनी जान गवाँ बैठते हैं । हमारी फसलें हर ऋतु में कुम्हला जाती है, हमारे बच्चों के पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं होता है और कई बच्चे तो जन्म लेने के बाद एक वर्ष भी नहीं जी पाते ।"

"हमारे कर्म दूषित हैं । अपने पापों की वजह से भद्दे व मैले हो चुके हैं एवं हम भीतर व बाहर दोनों तरफ से पूरी तरह से सड़ चुके हैं । हम कैलास पर्वत, जो कि स्वर्ग का द्वार है, जो हमें हर प्रकार से स्वस्थ कर देगा, उस धर्म द्वार की यात्रा कभी नहीं कर पाएँगे," ये कहते हुए एक महिला शोक के कारण रोने लगी ।

"बाबा अपने एक गीत में कहते हैंः जब तुम्हारे कपड़े कीचड़ से और मलमूत्र से रंगे हों, तब एक साबुन की सहायता से उसे साफ किया जा सकता है । परंतु जब तुम्हारा मस्तिष्क ही तुम्हारे दूषित कर्मों की वजह से मैला हो, तब सिर्फ उस परमपिता के नाम से उसे साफ किया जा सकता है ।"

परंतु वह महिला अभी भी शोक में डूबी हुई थी । यह देख भाई मर्दाना हताश हो गए । उन्हें आभास हुआ की उन्होंने अभी तक जो भी समझाया उसका एक शब्द भी गाँववालों ने नहीं समझा । सागर ही एकमात्र था जो उनके शब्दों को गहनता से सुन रहा था, उन्हें ग्रहण करके आत्मसात कर रहा था ।

भाई मर्दाना ने अपने मन में सोचा शायद वे ही पूर्ण रूप से निष्कपट नहीं हैं, और वे बेकार में उपदेश दे रहे हैं, उन्हें अपने स्वयं पर ही संदेह होने लगा ।

तत्पश्चात उन्होंने कहा, " भरोसा रखो । मैं स्वयं भी अभिशापित था । मुझमें भी लालच, धोखा, संदेह पूर्ण प्रवर्ति, ईर्ष्या, लालसा, लत, 'मैं', 'मेरा', अत्यंत अहंकार, अभिमान व कृतघ्नता सभी प्रकार के अवगुण थे । परंतु बाबा की छत्रछाया में मैं पोषित हो गया । मैं एक 'गुरमुख' हूँ जिसका अर्थ होता है वह व्यक्ति जो अपने अहंकार के आगे, एवं अपने भगवान से भी पहले अपने गुरू को ही देखता हो । उन्होंने मुझे यह भी सिखाया की मैं जिस सुख, सम्पत्ति, प्रतिष्ठा की तलाश में था वो असल में मेरे अंदर ही अमृत के झरने के रूप में बह रहा था । चाहे मैं कहीं भी रहूँ यह मेरे भीतर ही रहता है । सुखी व समृद्ध रहने के लिए तुम्हें कहीं जाने की जरूरत नहीं है । बाबा आज तुम्हारे पास आए हैं । तुम्हें उन पर भरोसा करना चाहिए और देखना सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा । फिर तुम्हें भी तुम्हारा शरीर, तुम्हारा गाँव, तुम्हारा घर सब कुछ सुंदर एवं धन्य दिखायी देने लगेगा ।

"यहाँ कुछ भी धन्य नहीं है । आपको यहाँ क्या सुंदर दिखायी देता है?"

भाई मर्दाना ने कहा, "तुम्हें अपनी आँखे खोलनी होंगी ।"

"परंतु हमारी आँखें तो खुली हुई हैं, हम अंधे थोड़े ना हैं," उन लोगों ने जवाब दिया ।

"देखो !" भाई मर्दाना ने बरामदे की ओर इशारा किया जहाँ सागर ने अपनी माँ का बनाया हुआ चित्र टांगा हुआ था । उसने चित्र में बनी आँखों की ओर इशारा किया जिसमें से दो आँखें मछली की तरह दिखती थीं व उनसे ऊपर तीसरी शांति से बैठी हुई दिखती थी ।

"अपने तीसरे नेत्र से देखने का प्रयास करो, वही नेत्र जो हमारे अंदर के अंतर्द्वन्द्व एव विरोधाभाष को समेटता है व हमें सच्चाई से अवगत करता है । जब तुम इसके पार देखना शुरू कर दोगे तब तुम्हारे दुःख तुम्हें कमल के पुष्प की तरह लगने लगेंगे और तुम्हारे अभिशाप उपहारों में बदल जाएँगे ।"

सभी गाँववाले उनके आगे निवेदन करने लगे, "हमें बताइए हम ये कैसे करें? हम अपना तीसरा नेत्र खोलने के लिए मेहनत करने को तैयार हैं ।"

तभी बाबा नानक के करवट बदलने की आवाज सुनाई दी । भाई मर्दाना ने अपनी आँखें बंद कर लीं और एकदम शांत हो गए जैसे कि उनके गुरू ने उनसे कुछ कहा हो । तत्पश्चात उन्होंने अपनी आँखे खोली और बोले, "प्रयत्न करना महत्वपूर्ण है । परंतु जरूरी नहीं है कि ये हमें अपने लक्ष्य से मिला देगा । देखो, मैं तबसे तुम्हें समझाने का प्रयत्न कर रहा हूँ । लेकिन मैं मूर्ख था ।

मैं सबसे आवश्यक बात ही भूल गया । मुझे मेरे प्रयत्न से पहले उस उदार व सारी अपेक्षाएँ पूरी करने वाले परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए थी । उसके सहयोग के बिना यह प्रयत्न किसी तूफान में फँसे तिनके की तरह है जो साकार नहीं हो सकता ।"

गाँव के एक व्यक्ति ने शिकायत भरे स्वर में कहा, "हम तो बहुत प्रार्थना करते हैं पर कभी कुछ भी नहीं होता ।"

"परंतु तुम कैसे करते हो अपनी प्रार्थना?" भाई मर्दाना ने पूछा ।

"अपने मुख से ।"

ये सुनते ही भाई मर्दाना मुस्कुरा उठे और बोले, "वर्तमान में जियो और अपने दिल से प्रार्थना करना सीखो । समझो, जिसके आगे तुम प्रार्थना कर रहे हो वही एक मात्र विद्यमान तत्व है । तुम अपनी दोनो आँखों से जितना देख पाते हो उससे कहीं ज्यादा वह अस्तित्व रखता है । 'वही है', 'वही है', 'वही है', 'वही है', 'एकमात्र वही है' । मेरे बाबा भी हर्षोन्मत्तता के साथ यही गाते हैं और मैं लाखों लाख बार यही कहना चाहता हूँ कि एकमात्र वही है । गुरू नानक का भी सबसे महत्वपूर्ण संदेश यही है कि उस एकमात्र का होना ही परम सत्य है । स्मरण रहे जब भी तुम अपनी तीसरी आँख खोलने के लिए अपना पहला कदम बढ़ाओगे और उस प्रियतम अथवा सम्पूर्ण ब्रह्मांड के स्वामी को अपनी धर्म यात्रा की सहायता के लिए प्रेम पूर्वक याद करोगे, तब वह तुम्हारे आगे हजार कदम बढ़ा देगा ताकि तुम अपनी खुली हुई आँखो से देख सको । हमारे प्रेम के फलस्वरूप वो हमें अनमोल उपहारों से सम्मानित करेगा । बाबा का कहना है कि यदि तुम अपने गुरू की कही हुई केवल एक बात को भी सुनके, उसपर ध्यान देकर उसका अनुसरण कर लोगे एवं उसे अपने कान व हृदय में सदा के लिए स्थान दोगे तो तुम्हारा मस्तिष्क मूल्यवान मणिकों, मोतियों, हीरे जवाहरत रूपी ज्ञान का भंडार बन जाएगा ।"

"क्या यह वास्तव में सच है? क्या गुरू से हमें सम्पत्ति और कीमती रत्न मिल सकते हैं?" किसी ने पूछा ।

"हमारी असल, उच्चतम एवं सर्वश्रेष्ठ सम्पत्ति वही एक परमात्मा है जिससे प्रेम के फलस्वरूप ही हमें भौतिक व आध्यात्मिक दोनों प्रकार के उपहार मिल सकते हैं । सबसे महत्वपूर्ण यह है कि हम उसे देखने के लिए अपनी तीसरी आँख खोलना सीख जायेंगे । ये बहुत ही चमत्कृत आँख है जिससे असुंदरता भी सुंदरता में और विष अमृत में परिवर्तित हो जाता है । जैसा बाबा अपने गीत में गाते हैं कि ***यह हमारे दुखों को आरोग्यता प्रदान करने वाली औषधि है*** । जीवन को अलग से देखने के अलग अलग तरीके हैं । जैसे कि हम सितारों से देखें

या समय की परम सीमा जो कि बेहद बड़ी व वृहत है, वहाँ से देखने पर हमारा भूत, वर्तमान एवं भविष्य अत्यधिक दूर दिखायी देता है । मैं तुम्हें एक उदाहरण से समझाता हूँ..."

मर्दाना ने अपना झोला उठाया और झोले में से मुट्ठी भरके समंदर की सीपियाँ निकाली, जो कि कुछ सम्पूर्ण थीं, कुछ थोड़ी पुरानी होने की वजह से घिस गयी थीं व उनमें से कुछ टूटने लगी थीं ।

सागर बोला, "मैं जानता हूँ ये शंख हैं और ये समंदर के अंदर पाये जाते हैं ।"

किसी ने उत्सुकतावश पूछा "समंदर के अंदर क्या है?" वे लोग मानसिक रूप से इतने अवरूद्ध हो चुके थे कि उन्होंने एक शब्द भी ध्यान से नहीं सुना । और वे सारे वर्णन को समझना छोड़ चुके थे । परंतु कहीं ना कहीं उनकी स्मृति के गहरे कोनों में और उनके स्वप्नों में 'समंदर' शब्द गूँजता था ।

"मेरे नाम का मतलब भी यही है, समंदर !" सागर ने उत्सुकता पूर्वक कहा । "यह पानी का विशाल स्थल है ..."

"जैसे मानसरोवर?"

"नहीं मानसरोवर की तरह नहीं ! इस पूरी पृथ्वी पर उतनी जमीन नहीं है जितने कि समंदर हैं !" सागर ने अत्यंत उत्साह से कहा । मेरे माता पिता ने मुझे इसके बारे में बताया था । समंदर इतने गहरे होते हैं कि इनके अंदर बड़े बड़े पर्वत, बड़े बड़े ज्वालामुखी भी स्थित हैं । भगवान की ही तरह यह भी रहस्यमयी एवं असीम है, इसके बारे में हमारा ज्ञान बहुत तुच्छ है । मेरे माता पिता मुझे अपने नाम का अर्थ याद रखने के लिए बोलते थे और यह भी की मेरे हृदय में समंदर समाहित है । अतः मुझे इसे सदा याद रखना चाहिए । मैंने कभी समंदर नहीं देखा परंतु मैं इसे अपने हृदय में महसूस कर सकता हूँ । शायद लामा मर्दाना भी इसी के बारे में बात कर रहे हैं !"

"ये कैसे सम्भव है? हमने तो कभी नहीं देखा !"

"हम में यह स्वीकार्य भाव होना चाहिए कि जो हम अपनी इन आँखों से नहीं देख सकते वे चीजें भी संसार में अस्तित्व रखती हैं," भाई मर्दाना ने प्रति उत्तर में कहा । "उदाहरण के तौर पे क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे ऊँचे पठार और कैलास पर्वत भी किसी समय समंदर के भीतर ही थे? ये शंख और ये सीपियाँ उसी का प्रमाण हैं जिसे मैं और बाबा नानक कैलास पर्वत की यात्रा से वापसी के समय एकत्रित करके लाए थे ।"

गाँववालों को भाई मर्दाना की बात समझ आने में कुछ वक्त लगा । कुछ समय के लिए वे एकदम शांत हो गए व मर्दाना की बातों पर खयाल करते हुए अपने दिमाग पर पूरा जोर डालने लगे ।

"इस संसार में कुछ भी सदा के लिए नहीं है । यहाँ तक कि कैलास पर्वत भी नहीं । एक दिन यह फिर से समंदर के भीतर समा जाएगा । परंतु मेरू पर्वत की ये पौराणिक कथा कभी भी समाप्त नहीं होगी । ये हमेशा हमारे मन में रहेगी ।

"मुझे लग रहा है मैं काफी समय से बोले जा रहा हूँ, आओ हम सब मिलकर प्रार्थना करें," मर्दाना ध्यान के आसन में बैठ गया और गाँववालों को विनम्र एवं करूणामयी आवाज में प्रार्थना करने की विधि समझाने लगा ।

"आराम से बैठ जाओ और अपनी आँखे बंद करो । परमात्मा हमारी सासों में बसा हुआ है और हवा की तरह वो हमारे चारों ओर है । उसकी उपस्थिति को महसूस करो । अगर तुम्हारे मन व मस्तिष्क में विचार उत्पन्न हो रहे हैं तो उन्हें आने दो और धीरे धीरे अपने ऊपर से ध्यान हटाते हुए अपने आप को उस परम तत्व को समर्पित कर दो । उसके द्वारा प्रदत्त हर चीज के प्रति आभारी रहो और वह परम प्रिय परमेश्वर, जिसका बसेरा तुम्हारा हृदय है एवं जो सारे कष्ट व दुःख मिटाने वाला है, उसकी खोज की यात्रा प्रारम्भ करने के लिए प्रार्थना करो ।"

सागर के इस आशापूर्ण हृदय के प्रति थोड़े समय के लिए किए गए भरोसे ने गाँववालों को एक नयी उम्मीद से भर दिया । वे अपने इस रूग्ण एवं उदासी भरी प्रवृत्ति से निकलकर उस जगह पर आना चाहते थे जहाँ पर उन्होंने उम्मीद से परिपूर्ण स्थिति को देखा व उसे अनुभव किया था । अतः उन्होंने मर्दाना द्वारा बताए गए निर्देश का पालन किया ।

ध्यान के पश्चात जब उन्होंने अपनी आँखें खोली तो उन्हें अपनी चेतना में कुछ परिवर्तन आभास हुआ । जिस धारणा व आदतन सोच के जाल में वे बंद थे उससे वे बाहर आ चुके थे । लम्बे समय से निष्क्रिय हो चुके दिमाग फिर से सक्रिय हो उठे ।

काफी रात बीत चुकी थी और मर्दाना बहुत देर से बोल रहे थे । अतः उन्हें थकान के कारण उबासी आने लगी । बाबा के द्वारा की गयी हल्की आहट को याद करके उनके चेहरे पे मुस्कान आ गयी । उस शांतिमय वातावरण में उन्होंने परमपिता परमात्मा से उन गाँववालों की सहायता की प्रार्थना की । आखिर बाबा का अचानक अपनी यात्रा के बीच में ही कुदांग गाँव आने का कारण भी तो

यही था । मर्दाना ने मन में सोचा, "जहाँ बाबा की जरूरत होती है, बाबा वहाँ पहुँच जाते हैं ।"

गाँववाले भी अब बहुत तनाव मुक्त अवस्था में पहुँच चुके थे और वे भी उबासी लेने लगे थे ।

वे मर्दाना के पैर छूकर अपने अपने घरों की ओर जाने के लिए निकलने ही लगे थे कि मर्दाना ने कहा, "बाबा ने आप लोगों के लिए एक संदेश भिजवाया है ।"

"कल सुबह, जब रात्रि पूरी तरह से ओस की बूँदों से भीगी होगी एवं आकाश में सितारे टिमटिमाते दिखायी देंगे तब गाँव के मध्य में आकर एकत्रित होना एवं बाबा और मेरे पीछे पीछे उस पहाड़ी के शिखर तक चलना जो तुम्हारे और गोसा गाँव को विभक्त करती है । बाबा तुम्हें धर्मद्वार की चौकठ तक लेकर जाएँगे जहाँ के दर्शन से तुम जब चाहो अपने दुखों का विसर्जन कर सकते हो । यह जगह कैलास पर्वत से भी अधिक पवित्र है और मानसरोवर से भी अधिक पावन है ।"

कहीं ना कहीं अभी भी गाँववालों के वृद्ध दिमाग यही सोच रहे थे कि उस पहाड़ की ऊँचाई बहुत है और वे उस पर कभी नहीं चढ़ पाएँगे । पर फिर भी वे बाबा नानक और मर्दाना का अनुसरण करने के लिए लालायित थे । अपने दुखों से मुक्ति पाने के लिए पर्वत शिखर पर चढ़ने के लिए तैयार हो गए ।

अगली सुबह सभी बच्चे, बुजुर्ग एवं अन्य लोग गाँव के मध्य मैदान में एकत्रित हुए । सागर के कुत्ते, बिल्ली भी उत्सुकता से इस अपूर्व यात्रा के लिए सबके साथ हो लिए । वे भी अपने अगले जीवन में मनुष्य योनि की प्राप्ति के लिए अत्यधिक आतुर थे ।

गुरू नानक, जिन्हें गाँव वाले अब पद्मसंभव रिन्पोचे नानक गुरू कहकर सम्बोधित करने लगे थे, अत्यधिक ऊर्जावान एवं ओजस्वी लग रहे थे । भाई मर्दाना लामा भी अपनी स्वस्थ ऊर्जा से चमक रहे थे । असल में उनकी चेतनत्व छवि व कल्याणकारी उपस्थिति के कारण ही गाँववालों ने बिना किसी दुराव छिपाव के उन लोगों पर विश्वास किया एवं उनके बताए मार्ग पर अनुसरण करने के लिए तैयार हो गये ।

मर्दाना के मार्गदर्शन में गाँववालों ने प्रार्थना की एवं उस पावन यात्रा की ओर अपना पहला कदम बढ़ाया जिस दिशा में वे पहले कभी नहीं गए थे । यद्यपि कुछ गाँववाले अपनी यात्रा के दौरान झुँझलाहट के साथ कराह भी रहे थे परंतु फिर भी उन सभी ने उस पहाड़ी के उच्च शिखर तक की यात्रा सम्पन्न की । जब उन्होंने वहाँ से नीचे झाँक के देखा तो वे उस रास्ते को देखकर

अचम्भित हो उठे जिस रास्ते पर वे चल कर आए थे । अपनी यात्रा को याद करते हुए वे हैरान थे कि कितने आराम से वे उस पहाड़ी तक पहुँच गए थे । आज पहली बार उन्होंने अपने गाँव को ध्यान से देखा । वह कितना प्यारा, सुखद एवं दिल छू लेने वाला दिखायी दे रहा था । उनके अपने ही घर उनके गाँव जननी पहाड़ी की सतह से इस प्रकार लिपटे हुए लग रहे थे जैसे की मानो पार्वती की रक्षात्मक देह के वक्रों में सिमटे हुए हों ।

गाँव वाले अपने इस अभ्यास के पश्चात स्वयं को काफी स्फूर्तिवान, स्वस्थ व जागृत महसूस करने लगे थे । उनके शरीर कृतज्ञता से परिपूर्ण होकर आनंद रूपी गीत गा रहे थे । वे समझ चुके थे कि इस आरोहण का लक्ष्य भी यही था । मर्दाना के अनुसार उनकी यात्रा का मतलब कैलास पर्वत ही है, जो कि ब्रह्मांड के केन्द्र का आधार है एवं जहाँ सभी देवों ने आनंद से ध्यान किया है । शिखर पर उन्हें सीख मिल गयी थी ।

यद्यपि तब तक पूर्ण रूप से सवेरा नहीं हुआ था । फिर भी चारों तरफ काफी रौशनी फैल चुकी थी । यह सुबह का वही क्षण है जब दूसरे जगत अर्थात ध्यान की अवस्था में जाने के लिए प्रकृति अपने सारे दरवाजे खोल देती है । नीला आसमान अभी भी सितारों की बूटियों से सुसज्जित था एवं सुबह का जागृत व उपचारात्मक मंद पवन का बहाव जिसे भारतवर्ष के ज्ञानी मलयानिल कहते हैं, ऊँची पहाड़ी की चोटियों से बहने लगा था एवं उन गाँववालों के हृदय को दुलारते हुए उनके अंगों व श्वासों तक पहुँच रहा था ।

बाबा नानक ने अपनी छड़ी से एक बड़ी चट्टान पर बने वृहत घेरे की ओर इशारा किया जो कि पानी व हवा के कारण धीरे धीरे नष्ट होने लगा था । उस चट्टान की प्रारम्भ से अंत तक बर्फ से ढकी हुई चोटियाँ इतनी ऊँची थीं की उनके शीर्ष बादलों व धुँध मे छिपे दिखायी पड़ रहे थे एवं वे मनुष्य की आँखों से अदृष्ट थे । गाँववाले यह दृश्य देखकर अचम्भित हो उठे और एक साथ ही उन सभी ने श्रद्धापूर्वक अपने शीश झुका दिए ।

उनके आसपास इतना कुछ विद्यमान है जिसका उन लोगों को कोई आभास नहीं था । यह सोचकर वे सब विस्मित थे । उस दृश्य ने उन सभी के हृदय व मन को विनम्र कर दिया था । वे सोचने लगे कि उनकी समझ कितनी अल्प है एवं वे कितने मंद व अंधे थे कि अपनी दयनीय सोच की सीमाओं से बाहर झाँकने का साहस किए बिना ही वे अपने गाँव कुदांग में दुखों से भरे हुए बैठे हुए थे !

भाई मर्दाना ने अपना रबाब निकाला व उसे बजाने लगे । यह देखते ही उन लोगों ने अपना ध्यान पहाड़ की चोटियों से हटाकर भाई मर्दाना की ओर

किया । उस लयबद्ध स्वर व मधुर संगीत में आत्म निरीक्षण करने लगे । इस ब्रह्माण्ड की उपस्थिति में उनके स्वयं के अस्तित्व के रहस्य ने उन्हें घोर आश्चर्य से भर दिया । तभी बाबा नानक ने अपना गला साफ किया और अपनी आँखे बंद कर ली ।

उनके अंतर्मन से एक शब्द प्रकट हुआ और हवा की तरंगों के साथ बहता हुआ उन लोगों के चारों तरफ झूल कर घाटियों, पहाड़ियों व ऊँची ऊँची चोटियों तक गूँज गया । तत्पश्चात उन लोगों के दिल और दिमाग तक पहुँचकर उन्हें इस प्रकार स्वतंत्र कर गया जिसकी कभी उन गाँववालों ने कल्पना भी नहीं की होगी ।

वह स्वर प्रसारित होता जा रह था । वह किसी एक तरंग में निहित दूसरी तरंग के प्रतिबिम्ब की भाँति आकार लेने लगा एवं कई अधिस्वरों में परिवर्तित हो गया । एक के बाद एक वे सभी स्वर मंत्र जाप करने वाली माला की तरह तब तक एक तार में बँधते चले गए जब तक वह स्वर अपनी जादुई शक्ति से उनके अस्तित्व को अपने अधीन कर के उनके हृदय के आर पार हो जाने वाला अत्यंत सम्मोहक धुन में ना बदल गया । पिछली रात्रि के मर्दाना के धर्मोपदेशों ने उनके कष्टों व दुखों से भरे हृदय व दिमाग को जीत कर साफ कर दिया था । अब उनके दिल व दिमाग बाबा के संदेशों व मधुर धुनों के लिए तैयार हो चुके थे । ये संगीतिक व उद्दात्त गीत हमारी आत्मा की उन गहराईयों एवं परमशीर्षों तक पहुँच सकते हैं जहाँ कोई नहीं पहुँच सकता । बाबा जो गीत गा रहे थे उसका अर्थ उन्हें समझ नहीं आ रहा था परंतु फिर भी भाई मर्दाना के सहयोग से वे उस संगीत को आत्मसात कर पा रहे थे और उस धुन ने उनकी आत्मा में जादू सा घोल दिया था । वे अब पहले वाले लोग नहीं रहे ।

बाहरी स्वरूप से की गयी धर्म यात्रा का भी अपना अस्तित्व है । परंतु उन लोगों के लिए जो इस धर्म यात्रा का मार्ग अपनाना चाहते हों । लेकिन उन गाँव वालों को अपने अंतर्मन के रोग हरने के लिए कहीं और जाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी । यह बात अब वे समझ चुके थे । उन लोगों ने अपने घरों में एकांतपूर्वक व धैर्यपूर्वक बैठकर भाई मर्दाना की सिखायी हुई बातों के अनुसार ध्यान किया । अतः उन्होंने अपने ही भीतर स्थित कैलास पर्वत के चरणों में बहने वाली आनंद रूपी मानसरोवर झील के पवित्र पानी से स्नान कर लिया था ।

तभी बाबा नानक और भाई मर्दाना अपने स्थान से उठे व अपने झोलों को उठाते हुए उस गाँव की ओर प्रस्थान करने लगे जहाँ उनकी उपस्थिति से लोगों के मन की आँखें खुल सकें । सागर भावुकता से भर गया और रोने ही

वाला था कि उसे यह बोध हुआ कि पद्मसंभव, जो उसके जीवन को पूरी तरह से बदलने आए थे, उनसे वह फिर कभी विमुक्त नहीं होगा ।

सोसा गाँव को जाने वाला निचला व लम्बा रास्ता जहाँ तक दिखायी देता था वहाँ तक गाँववाले अपनी आँखें मींच मींच के बाबा नानक और भाई मर्दाना को जाते हुए देख रहे थे । परंतु थोड़ी ही देर में वे उनकी दृष्टि से बाहर हो गए और इस प्रकार अन्तर्ध्यान हो गए जैसे कि मानो वे कभी थे ही नहीं ।

उन महान गुरूओं के आकस्मिक आगमन व अन्तर्ध्यान के साक्षी कई दिन, महीने, साल, दशक पश्चात गाँववालों ने धान में से निकली हुई हरी कलियाँ देखीं जो कि उस मिट्टी में से उगी थी जिस पर रिन्पोचे नानक गुरू ने अपने हाथों से धान के बीज बिखेरे थे । जिस झील के पानी को उन पावन आगंतुकों ने अपने डंडे से हिलाया था वह फिर कभी नहीं जमी । सागर भी अब बड़ा हो गया था एवं धार्मिक शिक्षाओं के लिए एक छोटा सा गोम्पा बनाने के लिए उसके पास जादुई ढंग से धन एकत्रित हो गया था । जिस समय बाबा नानक ने उस गाँव में अपने कदम रखे थे उस समय की तुलना में वे गाँव वाले ज्यादा समृद्ध थे । उन लोगों ने अपने बच्चों व उनके भी बच्चों को उन महान लोगों के भ्रमण के किस्से सुनाए । वे और उनकी कई पीढ़ियां इसी विस्मय में रहीं कि क्या यह कहानी कोई पौराणिक कथा थी या कोई सपना जिस ने सब कुछ बदल दिया ।

The Color of the Name

Collected from Chaudhans, Uttarakhand, by Himani Upadhyaya. Retold by Kamla K. Kapur. Translated into Hindi by Chandresha Pandey. Illustration by Rabin Maharjan.